RNI : UPBIL/2023/86318

डे नाईट न्यूज लखनऊ

DAY NIGHT NEWS LUCKNOW

☆☆☆ द्विभाषी हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका ☆☆☆

वर्ष-01 ★ अंक 08 ★ अप्रैल-2024

सम्पादक

दीपक गिरी

संरक्षक

स्वामी विवेकानंद जी

सह सम्पादक

डॉ० सुनील कुमार मिश्रा

प्रबन्ध सम्पादक

शुभम यादव

उप सम्पादक

आलोक सक्सेना 'निर्भीक'

सुनील सिंह

राज्य ब्यूरो

मनोज मिश्रा

सलाहकार सम्पादक

मनोज कुमार दुबे

लखनऊ ब्यूरो

बृजेश कुमार द्विवेदी

विधिक सलाहकार

एडवोकेट-संजय श्रीवास्तव

संवाददाता

संजय कुमार यादव, पंकज तिवारी, के.के.शुक्ला, डॉ.जी.एस.वर्मा, शुभम पटेल, सुरेन्द्र सिंह, सूर्या तिवारी, राजपाल राजवंशी, बलराम तिवारी, धर्मेंद्र तिवारी, डॉ.शिखा, विपुल भुषण, ब्रिजेश सिंह, नीतु सिंह, प्रेम शंकर सिंह, नीलेंद्र कुमार, अभय प्रताप सिंह, रूपेश सिंह,

ग्राफिक डिजाइनिंग

S.Y. 8881544447

संपादकीय व प्रधान कार्यालय

विकास नगर लरवनऊ,

पिन-226022

मो : 9807101947

स्वामी प्रकाशक एवं मुद्रक दीपक गिरी द्वारा नीलम प्रिंटिंग प्रेस, 41/381, नरही, लखनऊ, उत्तर प्रदेश-226001 से मुद्रित एवं 14/464 विकास नगर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश -226022 से प्रकाशित।

E-mail: daynightnews.in@gmail.com

पत्रिका से संबंधित समस्त वाद विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ, उ०प्र० न्यायालय होगा।

सभी पद अवैतनिक है।

16

अबकी बार, चार सौ पार

05

क्या होता है एल्जहाइमर डेमेंशिया ?

06

मुस्लिम तुष्टिकरण के लिए माफिया का साथ

22

प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण मुन्नार

आईजीएल के बिजनेस हेड एस के शुक्ल ने भारत एवं यूएस के मध्य आयोजित बायो ईंधन अंतराष्ट्रीय समिति की अध्यक्षता की।

उत्तर प्रदेश डिस्टलरी एसोसिएशन के अध्यक्ष एस के शुक्ल , जनरल सेक्रेटरी रजनीश अग्रवाल,ने नई दिल्ली में आयोजित यूएस,भारत कॉन्फ्रेंस की अध्यक्षता किया। इस कॉन्फ्रेंस में एस के शुक्ल ने अपने व्याख्यान में बताया की कैसे उत्तर प्रदेश सरकार के साथ मिलकर यूपीडीए एथेनाल उत्पादन में अपनी भूमिका अदा कर रहा है।इसके साथ ही उन्होंने सफेद मक्के से एथेनाल उत्पादन,कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग,किसानों की आय में वृद्धि, रोजगार सृजन, गुणवत्ता पूर्ण देशी, विदेशी, मदिरा, राजस्व में वृद्धि, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण इत्यादि क्षेत्रो में एक साथ कार्य करते हुए उत्तर प्रदेश एथेनाल उत्पादन में अग्रिम भूमिका अदा कर रहा है। निसंदेह एस के शुक्ल और रजनीश अग्रवाल के संयुक्त नेतृत्व में यूपीडीए अपना सर्वोच्च योगदान दे रहा है।इसके साथ ही आईजीएल के बिजनेस हेड होने के नाते उन्होंने पूर्वांचल को मक्के के उत्पादन हेतु सर्वप्रथम चुना और इनके नेतृत्व में 120 एकड़ मक्के की फसल को बुवाई हुई है जो को आज तक अपने में एक रिकार्ड है। किसानों को एस के शुक्ल पर पूरा भरोसा है क्युकी ये जो कहते है वह करते है।इसके साथ ही इस अंतराष्ट्रीय समित में यूएस की नई तकनीकियों की बारीकियों को समझते हुए उसे भारत में कैसे अपनाया जाए और उत्पादन और रोजगार में वृद्धि हो इस पर भी गहन से चर्चा हुई, एस के शुक्ल ने कहा की आज भारत वैश्विक स्तर पर प्रत्येक क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बना रहा है क्युकी भारत में सबसे ज्यादा युवा है और युवा ही किसी देश को तकदीर और तस्वीर बदलते है आज डिस्टलरीयो में आईआई टी, आईबीएम, एम एन आईटी के छात्र भी जॉब के लिए आ रहें है आज पुराने दौर की डिस्टलरिया नही है आज यह सब बदल गया है।नई तकनीकियों को अपनाने और नए प्रोजेक्ट लगाने से भी डिस्टलरी उद्योग पीछे नही हट रहा क्युकी उसके पास एसेट मैनेजमेंट है। इसके साथ ही एस के शुक्ल ने कहा की कुछ ही वर्षो में पूरे विश्व में यूपी बायो ईंधन उत्पादन में नंबर वन पर रहेगा। रजनीश अग्रवाल ने सभी अतिथियों के प्रति आभार जताया और एस के शुक्ल के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा की निसंदेह आप सदैव देश हित में लगे रहते है।

सम्मान

आईजीएल के बिजनेस हेड एस के शुक्ल द्वारा यूपीडीए एवं यूएसजीसी के मध्य समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित हुआ

आईजीएल के बिजनेस हेड एस के शुक्ल द्वारा यूपीडीए एवं यूएसजीसी के मध्य समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित हुआ उत्तर प्रदेश डिस्टलरी एसोसिएशन के अध्यक्ष एस के शुक्ल, जनरल सेक्रेटरी रजनीश अग्रवाल, द्वारा इथेनॉल क्षेत्र में सहयोग और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए 23.04.2024 को नई दिल्ली में यूपी डिस्टिलर्स एसोसिएशन (यूपीडीए) और यूएस ग्रेन्स काउंसिल (यूएसजीसी) के बीच एक अभूतपूर्व समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। यह वास्तव में एक ऐतिहासिक दिन और कार्यक्रम था जिसकी अध्यक्षता उत्तर प्रदेश डिस्टलरी एसोसिएशन के अध्यक्ष एस के शुक्ल ने की और इस एमओयू की घोषणा अमेरिकी राजदूत एच.ई. एरिक गारसेटी ने किया। इस अवसर पर यूएसजीसी के चेयरमैन ने बताया की यू.एस. ग्रेन्स काउंसिल (यूएसजीसी), अमेरिकी कृषि विभाग के तहत अमेरिका की एक सर्वोच्च संस्था है। यूएसजीसी जौ, मक्का, ज्वार और डिस्टिलर के सूखे अनाज घुलनशील (डीडीजीएस) और इथेनॉल सहित संबंधित उत्पादों

के लिए निर्यात बाजार विकसित करता है। 28 स्थानों पर पूर्णकालिक उपस्थिति के साथ, काउंसिल 50 से अधिक देशों और यूरोपीय संघ में कार्यक्रम संचालित करती है और भविष्य के दृष्टिकोण को से देखते हुए उच्च उपज वाले किस्म के बीज विकसित करने के लिए भारतीय कृषि क्षेत्र और पारिस्थितिकी तंत्र में गहराई से उतरना, पारिस्थितिकी तंत्र में उच्च इथेनॉल मिश्रणों के एकीकरण के लिए नवीनतम अमेरिकी / वैश्विक प्रौद्योगिकियों से नवीन खेती और लॉजिस्टिक प्रथाओं की स्थापना करना, और किसानों को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए है। मकई मूल्य इथेनॉल सह-उत्पादों को अधिकतम करना, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म का लाभ उठाना आदि इस समझौता ज्ञापन का मुख्य उद्देश्य है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आईजीएल के बिज़नेस हेड और यूपीडीए के अध्यक्ष एस के शुक्ल ने बताया की यूपीडीए भारत के इथेनॉल सम्मिश्रण कार्यक्रम (ईबीपी) में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और वैश्विक इथेनॉल शिखर सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व करने, मक्का विकास के लिए अनुसंधान संस्थानों के साथ सहयोग करने और जैव ईंधन और अनाज में निवेश और प्रौद्योगिकी प्रवाह के लिए इन्वेस्ट इंडिया के साथ साझेदारी को बढ़ावा देने जैसी पहलों में सक्रिय रूप से लगा हुआ है। यह सामूहिक प्रयास उद्योग के विकास, नवाचार और तकनीकी उन्नति के प्रति यूपीडीए की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। उन्होंने बताया की प्रदेश में कुल 30 अनाज आधारित और 100 आसवनियों का सञ्चालन रहा है और प्रकार की आसवनियों द्वारा 350 करोड़ बल्क लीटर के उत्पादन से ब्राण्डेड देशी शराब के 45 बिलियन यूनिट् पैक्स बनाकर 11.87 प्रतिशत ब्लेंडिंग हासिल किया है औरवर्ष 2024-25 में रू 456 बिलियन का उत्पाद शुल्क राजस्व उत्तर प्रदेश सरकार को देने का लक्ष्य निर्धारित किया है। और बताया की उन्होंने पूर्वांचल को मक्के के उत्पादन हेतु सर्वप्रथम चुना और इनके नेतृत्व में 80 एकड़ मक्के की फसल की बुवाई हुई है और इसके साथ ही इस अंतराष्ट्रीय समित में यूएस की नई तकनीकियों की बारीकियों को समझते हुए उसे भारत में कैसे

अपनाया जाए और उत्पादन और रोजगार में वृद्धि हो इस पर भी गहनता से विचार किया, एस के शुक्ल ने कहा की आज भारत वैश्विक स्तर पर प्रत्येक क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बना रहा है क्युकी भारत में सबसे ज्यादा युवा है और युवा ही किसी देश की तकदीर और तस्वीर बदलते है आज डिस्टिलरियों में आईआई टी, आईबीएम, एम एन आईटी के छात्र भी जॉब के लिए आ रहें है आज पुराने दौर की डिस्टिलरियां नही है आज इनमे बहुत बदलाव हो गया है। नई तकनीकियों को अपनाने और नए प्रोजेक्ट लगाने से भी डिस्टलरी उद्योग पीछे नही हट रहा क्युकी उसके पास एसेट मैनेजमेंट है। इसके साथ ही एस के शुक्ल ने कहा की कुछ ही वर्षों में पूरे विश्व में यूपी बायो ईंधन उत्पादन में नंबर वन पर रहेगा। रजनीश अग्रवाल ने सभी अतिथियों के प्रति आभार जताया और एस के शुक्ल के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा की निसंदेह आप सदैव इंडस्ट्री, इंडस्ट्री सम्बन्धित उद्योगों एवम किसानों के हित तत्पर रहते है। उक्त कार्यक्रम में यूएसजीसी के चेयरमैन, अध्यक्ष और सीईओ, निदेशक दक्षिण एशिया के साथ-साथ यूपीडीए के महासचिव, रेडिको खेतान लिमिटेड के संस्थापक-संरक्षक सदस्य और अन्य राजनयिकों और विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति रही।

तुष्टिकरण की राजनीति का कुफल संदेशखाली प्रकरण

ब्यूरो डेस्क

पश्चिम बंगाल के उत्तर 24-परगना जिले में कालिंदी नदी के किनारे बसा गांव संदेशखाली पिछले कई दिनों से चर्चाओं में है। तृणमूल कांग्रेस के नेता शाहजहां शेख और उसके दो सहयोगियों पर यहां की महिलाओं ने कथित अत्याचार और यौन उत्पीड़न के कई गंभीर आरोप लगाए हैं। संदेषखाली की पीड़िताओं ने जो बातें जिम्मेदारी लोगों को बताई हैं, वह 21 वीं सदी में अकल्पनीय है। ऐसे में अहम सवाल है कि कोई शाहजहां शेख कैसे इतना निरंकुश हो जाता है? शाहजहां जैसे अत्याचारियों को ताकत कहां से मिलती है? इन सवालों का जवाब भाजपा प्रवक्ता एवं सांसद सुधांशु त्रिवेदी के बयान के छिपा है। सुधांशु के अनुसार, 'जो कुछ संदेशखाली में हो रहा है वो मात्र एक घटना नहीं बल्कि एक राजनीति सोच है, जो 78 वर्ष पूर्व नोआखाली से लेकर आज के संदेशखाली तक बंगाल के लिए नासूर बनती जा रही है। शाहजहां शेख एक व्यक्ति नहीं एक प्रवृत्ति है जिसे मात्र बंगाल में नहीं बल्कि पूरे भारत में एक विशेष प्रकार का सेक्युलर संरक्षण प्राप्त है।'

राजनीतिक इतिहास के पन्ने पलटे तो कांग्रेस पार्टी को मुस्लिम तुष्टिकरण की जननी कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। आजादी के बाद नेहरू से वर्तमान तक पार्टी तुष्टिकरण की राजनीति को समर्पित रही है। आजादी के बाद घरेलू ही नहीं, विदेशी नीति भी तुष्टिकरण से तय होती थी। सबसे बड़ी विडंबना यह रही कि जिन मुसलमानों के नाम पर कांग्रेस ने देश में तुष्टिकरण की नीति का आगाज किया उन मुसलमानों की माली हालत सुधरने की बजाय बिगड़ती चली गई। दूसरी विडंबना यह हुई कि कांग्रेसी तुष्टिकरण का संक्रमण क्षेत्रीय पार्टियों, मीडिया, बुद्धिजीवियों तक होता गया।

पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस की सरकार मुस्लिम तुष्टिकरण के बलबूते ही सत्ता में आई थी। सत्ता पर काबिज होने के बाद से तृणमूल की सरकार ने मुस्लिम तुष्टिकरण के लिए हिंदुओं व दूसरे समुदायों की पूरी तरह अनदेखी की। हिन्दुओं के धार्मिक उत्सवों और यात्राओं तक में सरकार ने अड़चने लगाने का काम किया। पश्चिम बंगाल में हिन्दुओं की जो दुर्दशा हो रही है, वो किसी छिपी नहीं है। तृणमूल के नेता और कार्यकर्ता जिस तरह का अत्याचार कर रहे हैं, वो सुनकर हैरानी होती है कि हम किसी लोकतांत्रिक व्यवस्था में रहते हैं, और पश्चिम बंगाल में लोकतांत्रिक तरीके से चुनी हुई सरकार है। पश्चिम बंगाल हो या फिर दिल्ली मुस्लिम तुष्टिकरण को लेकर इनमें होड़ है। दिल्ली के दंगों में आम आदमी पार्टी के नेताओं की भूमिका सर्वविदित है। दिल्ली में शाहीन बाग प्रदर्शन के पीछे भी मुस्लिम तुष्टिकरण वाली राजनीतिक ताकतें अपना चेहरा चाहकर भी छुपा नहीं पाई थीं। तेलंगाना में जब बीआरएस और राजस्थान और छत्तीAसगढ़ में कांग्रेस की सरकार थी, तब वहां मुस्लिम तुष्टिकरण ही राज्यनीति था। बिहार में राष्ट्रीय जनता दल जब सरकार की हिस्सेदार थी, तब वहां भी मुस्लिम तुष्टिकरण चरम पर था।

> **यदि हम अपने आचार विचार से हिन्दू विरोधी नहीं हैं तो हम सेकुलर नहीं है। अतएव यदि हमें सेकुलर बने रहना है तो हमें चाहिए कि हम कष्मीर घाटी से भगा दिये गये हिन्दुओं की पीड़ा प्रताड़ना, उनके दुख और दैन्य की बात न करें। कन्हैया लाल की हत्या और संदेषखाली पर मुंह बंद रखें। यानी हिन्दुओं पर होने वाले अत्याचारों जिसमें सरकारें और राजनीति दल षामिल हैं, को अनदेखा करें**

आजादी के बाद देश में जिस मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति को जो बीज बोया गया, वह आगे चलकर वट वृक्ष बन गया। भारत दुनिया का इकलौता देश बना जहां बहुसंख्यकों के हितों की कीमत पर अल्पसंख्यकों को वरीयता दी गई। कांग्रेसी तुष्टिकरण का पहला नमूना आजादी के तुरंत बाद देखने को मिला जब देश के पहले राष्ट्रपति डॉ

राजेंद्र प्रसाद ने गुलामी के पहले कलंक को मिटाने के लिए भव्य सोमनाथ मंदिर बनाने की पहल की। लेकिन मुस्लिम परस्ती के चलते प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने न सिर्फ सोमनाथ मंदिर के नवीनीकरण और पुनर्स्थापना के कार्य से खुद को अलग कर लिया बल्कि तत्कालीन सौराष्ट्र के मुख्यमंत्री को आदेश दिया कि मंदिर निर्माण में सरकार का एक भी पैसा नहीं लगना चाहिए। इतना ही नहीं, जब राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद पुनर्निमित सोमनाथ मंदिर का उद्घाटन करने जाने लगे तब नेहरू ने उन्हें रोकने की नाकाम कोशिश भी की। वास्तव में, अल्पसंख्यकवाद और मुस्लिम तुष्टिकरण ही भारत के छद्म धर्म (पंथ) निपरेक्षतावाद की मूल धुरी है।

इस देश के मुसलमानों का खुश रहना नहीं, उन्हें खुश रखने के लिए हर संभव प्रयत्न का नाम है सेकुलरिटी। जैसे गरीबी हटाने का नारा जीवित रखने के लिए गरीब बनाकर रखना एक राजनीतिक आवश्यकता है, ठीक उसी प्रकार से इस देश के मुसलमानों को अपनी पूजा पद्धति रोजा नमाज और मस्जिद सहित यहां की मुख्य सांस्कृतिक और राष्ट्रीय धारा न बनने देकर उसके समानांतर एक मुस्लिम मजहबी धारा बनाकर रखना भी वोट राजनीति की जरूरत है।

वोट राजनीति की इस विवष्ता को कतिपय राजनीतिक दल, दल विहीन राजनेता और बुद्धिवादी देश का स्थायी भाव बना देने की जी तोड़ कोशिशें कर रहे हैं। स्वभावतरू पंथनिरपेक्ष भर को सुनियोजित ढंग से पंथ और मजहब के संदर्भ में सोचने, जीने और अपना मानस बनाने को कहा जा रहा है कि यदि ऐसा सोचा और किया न गया तो देश साम्प्रदायिकता की आग में जलकर राख बन जायेगा। यदि संक्षेप में और कुछ वाक्यों में कहें तो आज के भारत की धर्म (पंथ) निरपेक्षता मुस्लिम सापेक्षता का पर्याय है। दोनों एक दूसरे के दास हैं। दोनों की आधार भूमि है सत्ता राजनीति। यह मान लिया गया है कि मुस्लिम सापेक्ष न होना पंथनिरपेक्षता का विरोधी होना है। यह कि यदि हमारी सोच का केंद्र बिंदु मुसलमान नहीं हैं तो हम भारत राष्ट्र को तोड़ने की दिषा में बढ़ रहे हैं। यदि हम किसी अबोध शिशु की दुधमुंही मुस्कान से प्राप्त होने वाले आत्म और वात्सल्य का अनुभव नहीं करते, तो हम मुस्लिम ही नहीं, भारत विरोधी भी हैं। और यह कि यदि हम अपने आचार विचार से हिन्दू विरोधी नहीं हैं तो हम सेकुलर नहीं है। अतएव यदि हमें सेकुलर बने रहना है तो हमें चाहिए कि हम कष्मीर घाटी से भगा दिये गये हिन्दुओं की पीड़ा प्रताड़ना, उनके दुख और दैन्य की बात न करें।

पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस की सरकार मुस्लिम तुष्टिकरण के बलबूते ही सत्ता में आई थी। सत्ता पर काबिज होने के बाद से तृणमूल की सरकार ने मुस्लिम तुष्टिकरण के लिए हिंदुओं व दूसरे समुदायों की पूरी तरह अनदेखी की। हिन्दुओं के धार्मिक उत्सवों और यात्राओं तक में सरकार ने अड़चने लगाने का काम किया। पश्चिम बंगाल में हिन्दुओं की जो दुर्दशा हो रही है, वो किसी छिपी नहीं है

कन्हैया लाल की हत्या और संदेषखाली पर मुंह बंद रखें। यानी हिन्दुओं पर होने वाले अत्याचारों जिसमें सरकारें और राजनीति दल षामिल हैं, को अनदेखा करें। कांग्रेस की इस तुष्टिकरण की नीति का असर दूसरी राजनीतिक पार्टियों पर भी पड़ा और वे मुस्लिम वोट बैंक छिटकने के डर से हिंदुओं के हित में बोलने से कन्नी काटने लगीं। लालू प्रसाद यादव, मुलायम सिंह यादव, अखिलेश यादव, तेजस्वी यादव, ममता बनर्जी, एन चंद्रबाबू नायडू, अरविंद केजरीवाल, चंद्रशेखर राव जैसे नेताओं की मुस्लिमपरस्ती एक दिन में नहीं आई है। यह सब कांग्रेसी तुष्टिकरण रूपी वटवृक्ष के फल हैं। दरअसल कांग्रेस द्वारा क्षेत्रीय अस्मिताओं की उपेक्षा और तानाशाही से उपजी क्षेत्रीय पार्टियों ने मुस्लिम वोट हासिल करने के लिए मुसलमानों के सशक्तिकरण की बजाय तुष्टिकरण का कांग्रेसी फार्मूला अपना लिया। इसका नतीजा यह हुआ कि एक ओर मुसलमानों का पिछड़ापन बढ़ा तो दूसरी ओर कट्टरपंथ को उर्वर जमीन मिली। 'तुष्टीकरण' की राजनीति ने मुख्यरूप से मुस्लिमों के बीच की 'मलाईदार पर्त' को ही फायदा पहुंचाया। इससे कथित धर्मनिरपेक्ष राजनीति का खोखलापन उजागर होता है।

कांग्रेस का इतिहास खुद इस बात का गवाह है कि उसने अपनी पूरी राजनीति तुष्टीकरण को आधार बनाकर ही की है अल्पसंख्यकों में भी उसने सबसे अधिक मुस्लिम वोटों पर अपना ध्यान केंद्रित किया है, क्योंकि मुस्लिम वोट देश के कई हिस्सों में निर्णायक साबित होते हैं। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने कहा था कि देश के बजट पर पहला हक मुसलमानों का बनता है। साल 2018 में उर्दू अखबार इंकलाब की एक रिपोर्ट के अनुसार, कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी द्वारा मुस्लिम बुद्धिजीवियों के बीच कथित तौर पर अपनी पार्टी को मुस्लिमों की पार्टी बताया था। कर्नाटक चुनाव में कांग्रेस और पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस की जीत की बड़ी वजह मुसलमानों का थोक वोट मिलना था। पिछले साल मुस्लिम वोटों की बदौलत कांग्रेस तेलंगाना में सत्ता हासिल करने में सफल रही। राजनीतिक दल वोट बैंक के लिए तुष्टिकरण का सहारा लेते आए हैं। राजनीतिक दलों ने अपने एजेंडे के हिसाब से धर्म व संप्रदाय बांट रखे हैं और उसके तुष्टिकरण में वो किसी भी हद तक चले जाते हैं। सच्चाई यह है कि तुष्टिकरण देश के विकास, सद्भाव, भाईचारे, सुरक्षा और शांति के लिए हानिकारक है। मौकापरस्त, स्वार्थी और गलत प्रवृत्ति के व्यक्ति तुष्टिकरण की आड़ में अन्याय, अनाचार, दुराचार और पाश्विकता करते हैं जो शाहजहां शेख और उसके गुर्गों ने संदेशखाली में किया। सही मायनो में संदेशखाली में जो कुछ हुआ वो राजनीतिक तुष्टिकरण का कुफल है। राजनीतिक दलों को तुष्टिकरण की राजनीति से बाज आना चाहिए, इसी में सबकी भलाई है।■